भोलालाल दास

मातृभाषानुरागी भोला लाल दासक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर ग्राममे सन् 1897 ई० मे भेल छलनि। हिनक पिताक नाम चोआलाल आ माताक नाम सकलवती छल। हिनक प्राथमिक शिक्षा मातृक महिषीमे (सहरसा) भेलनि। मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाक बाद ओ टी.एन. बी. कॉलेज, भागलपुरसँ बी. ए. आ इलाहाबाद लॉ कॉलेजसँ एल. एल. बी. कयलनि। सन् 1925 ई० सँ लहेरियासराय (दरभंगामे) ओकालति आरम्भ कयलनि। हिनक निधन 1977 मे भेलनि।

हिनक प्रमुख रचना-व्याकरण प्रबोध, सुबोध व्याकरण, सरल व्याकरण, गद्य कुसुमाञ्जलि (सम्पादन) 'मिथिला' संग सम्पादन भारती (मासिक पत्रिका, सम्पादन) क अतिरिक्त विभिन्न पत्र पत्रिकामे प्रकाशित अनेकानेक निबन्ध अछि।

मातृभाषा मैथिलीक असीम सेवाक लेल हुनका सम्मानित कयल गेलनि जाहिमे उल्लेखनीय अछि- 'मिथिला साहित्य संस्कृति संस्थान' दरभंगासँ विद्यारत्न, 'पटनाक चित्रगुप्त सभा' द्वारा ' मिथिला सरोज' , 'संकल्पलोक ' लहेरियासराय (दरभंगा) द्वारा मिथिला विभूति, बिहार सरकारक राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा ताम्रपत्र ।

प्रस्तुत निबन्धमे लेखक राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषाक महत्त्वक वर्णन कयने छथि। मातृभाषाक बुन्दसँ राष्ट्रभाषाक सिन्धुकेँ भरल जाइत अछि। भारत एक विशाल देश अछि जाहिमे भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, वेश-भूषा, खान-पान, रूप-रंग आदिक विभिन्नता अछि। दक्षिण भारतीय तेलगू, तमिल, कन्नड़ ओ मलयालम बजैत अछि तँ उत्तर भारतमे गुजराती, मराठी, बंगाली, उड़िया, मैथिली ओ भोजपुरी बाजल जाइत अछि। तेँ एक एहन सर्वमान्य भाषाक आवश्यकता अछि जे सम्पूर्ण राष्ट्रकेँ एक सूत्रमे बान्हय ताहि लेल राष्ट्रपिता महात्मागांधी द्वारा हिन्दीकेँ प्रस्ताव कयल गेल आ समस्त देशमे एकरा स्वीकृति भेटलैक। मुदा नेनाकेँ त्रिभाषाफर्मूलाक अनुसार प्राथमिक शिक्षा अपन मातृभाषामे प्राप्त करब आवश्यक, जाहिसँ ओकर आन्तरिक प्रतिभाक समुचित विकास भऽ सकय। वस्तुतः मातृभाषा ओ राष्ट्रभाषा एक दोसराक पूरक अछि।

राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा

इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि छोट-छोट देश छैक तँ ओहि सभक मातृभाषा अंगरेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि ओकरा सभक राजभाषा अथवा राष्ट्रभाषा सेहो छैक। ओहि सभ ठाम राष्ट्रभाषा आ मातृभाषाक कोनो भेद वा प्रश्न नहि छैक। मुदा भारतवर्ष एक विशाल राष्ट्र अछि। ई एकटा महादेशे अछि जाहिमे पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, मद्रास, केरल आदि भिन्न-भिन्न राज्य इंगलैंड आदि देशक तुलनामे अछि। एहि सब राज्यकेँ मिलाय विशाल भारतीय संघक एक पैघ राष्ट्र संगठित भेल अछि। एहिमे केवल भाषेटा नहि, धर्म, सम्प्रदाय, जाति, लिपि इत्यादिहुक भिन्नता छैक। भाषो सबमे दक्षिण भारतक तेलगू, मलयालम, कन्नड़ आ' उत्तर भारतक मराठी, गुजराती, बंगला, मैथिली, हिन्दी आदि बड़ उन्नत आ' प्रशस्त भाषा अछि। तँ प्रश्न उठैछ जे समस्त भारतीय राष्ट्रक भाषा की हो ?

ई तँ निश्चित अछि जे संसारक प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्रकेँ अपन-अपन स्वतंत्र राष्ट्रभाषा छैक। भारतो राष्ट्रकेँ एकटा कोनो राष्ट्रभाषा अवश्य चाही जकरा द्वारा उत्तरसँ दक्षिण एवं पूर्वसँ पश्चिम धरिक सब राज्य परस्पर बाजब-भूकब, लिखा-पढ़ी आ' राजकाज चलाए सकथि। ओना तँ एहि सब राज्यक प्रत्येक मातृभाषा भारतीय राष्ट्रक भाषा थिक मुदा कोनो एक भाषाकेँ यावत् समस्त राष्ट्र सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु भारतीय राष्ट्रभाषा स्वीकार नहि करत तावत् ने अपने काज एकतापूर्वक चलत आ' ने संसारक आने देशसँ समस्त भारतीय राष्ट्रक सार्वजनिक रूपेँ आदान-प्रदान भऽ सकत। विशेषत: शिक्षा क्षेत्रमे भारतीयताक भावना नहि आबि सकत।

1947 ई० पर्यन्त भारतवर्ष पराधीन छल। अंगरेज एकर अधिपति छलाह। ओ अपना अंगरेजी भाषाकेँ भारतक राजभाषा बनौलनि आ शिक्षोक माध्यम मुख्यत: अंगरेजिएकेँ रखलनि। मुदा स्वतंत्रताक आन्दोलन-क्रममे नेता लोकनि सात समुद्र पारक एहि विदेशी भाषाकेँ ने राजभाषा, ने राष्ट्रभाषा, ने लोक शिक्षाक माध्यमक लेल उपयुक्त बुझलनि। महात्मा गांधी एतुक्के कोनो भाषाकेँ राष्ट्रभाषा बनेबाक आवश्यकता बुझलनि । यद्यपि हुनक अपन मातृभाषा गुजराती छलनि आ' गुजरातीकेँ अपन लिपि तथा साहित्य छैक तथापि जखन ओ राष्ट्रीय स्वतंत्रताक आन्दोलनमे काश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि आ' अटकसँ कटक धरिक प्राय: सब स्थानक भ्रमण करय लगलाह तँ स्पष्ट देखलनि जे हिन्दीए एकटा एहन भाषा अछि जकरा द्वारा

ओ अपन विचारक प्रचार लोकमे अधिक ठाम कऽ सकै छलाह। शिक्षाक पद्धतियोमे हुनका केवल किरानी वा सरकारी अफसरक सेना तैयार करबाक नहि छलनि, प्रत्युत सब क्षेत्रमे वास्तविक राष्ट्रीयताक भावना उत्पन्न करबाक छलनि तेँ राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेनक अध्यक्षतामे एक समितिक निर्माण करौलन्हि आ तकरा द्वारा भाषाक विषयमे त्रिभाषा सिद्धान्तक योजना स्वीकृत भेल। एकरे नाम पड़ल वर्द्धा योजना।

त्रिभाषा सिद्धान्तक अर्थ अछि मातृभाषा, राष्ट्रभाषा आ विश्व भाषाक अनिवार्यता एवं एहि तीनूक सामंजस्य वा क्षेत्र निर्णय। प्रत्येक राज्य अपना-अपना मातृभाषामे अपन-अपन खास सरकारी काज वा शिक्षाक विकास करौ मुदा समस्त राष्ट्रक काज वा भिन्न-भिन्न राज्यक पारस्परिक काज एक राष्ट्रभाषा हिन्दीक द्वारा हो। तदर्थ शिक्षापद्धतिमे अंगरेजीक स्थान हिन्दीकेँ देल जाए। एकर अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय काजक हेतु अर्थात् संसारक भिन्न-भिन्न राष्ट्रसँ अबरजात वा सम्बन्ध सरोकार रखबाक लेल अंगरेजी वा आने कोनो व्यापक भाषा नवीन वा प्राचीन सेहो विद्यार्थीकेँ अपना-अपना रुचि तथा आवश्यकताक अनुसार पढ़बाक सुविधा हो। अंगरेजी राष्ट्रभाषा जनु रहौ।

जखन 1947 ई० मे देश स्वतंत्र भेल आ तदर्थ सभक सम्मतिसँ संविधान बनल तँ ई लिखि देल गेल जे हिन्दी क्रमशः अँगरेजीक स्थान लै लियै आ' 1965 ई० सँ एकमात्र हिन्दिये समस्त भारतीय संघक राष्ट्रभाषा भऽ जायत। मुदा ताहिसँ पूर्वहि कतोक संशोधन संविधानमे भेल जाहिसँ हिन्दीकेँ ओ स्वीकृत स्थान नहि भेटलैक अछि। सब मातृभाषाकेँ आब राष्ट्रभाषा कहल जाइछ।

त्रिभाषा सिद्धान्त एतबा स्पष्ट कयने अछि आ' एहिसँ उत्तम कोनो समाधानो नहि देखि पड़ैछ जे निम्नवर्गसँ किछु दूर ऊपर धरि शिक्षाक माध्यम विद्यार्थी वर्गक मातृभाषा हो यदि एहिमे किछु साहित्य पौल जाए आ' साहित्य-सर्जनाक शक्तियो वर्त्तमान रहैक।

शब्दार्थ

अधिपति - मालिक

परिवर्धित - विकसित

किंचित - थोड़

प्रशस्त - ख्यात

त्रिभाषा – तीन भाषा

दुरन्त – कठिन

निधि – खजाना

समस्त – सम्पूर्ण

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चुनाव करू :

(i) अनेकतामे एकता कोन देशमे अछि –

(क) फ्रांस (ख) बंगला देश

(ग) भारत (घ) चीन

(ii) भारत स्वतंत्र भेल –

(क) 1954 (ख) 1949

(ग) 1960 (घ) 1947

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(क) मैथिली मिथिलामे लोकक ..... भाषा अछि।

(ख) सरकार बुझैत अछि जे हिन्दी मैथिलीक भाषा आ .....मात्रक अन्तर अछि।

3. निम्नलिखित प्रश्नमे शुद्ध-अशुद्धकेँ देखाउ :

(क) राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेनक अध्यक्षतामे एक समितिक निर्माण कयल गेल आ तकरा द्वारा भाषाक विषयमे त्रिभाषा सिद्धान्तक योजना स्वीकृत भेल। एकरे नाम पड़ल वर्द्धा योजना।

(ख) गांधीजीक मातृभाषा हिन्दी छलनि।

4. सप्रसंग व्याख्या करू :

(क) ओना तँ एहि सब राज्यक प्रत्येक मातृभाषा भारतीय राष्ट्रक भाषा थिक मुदा कोनो एक भाषाकेँ यावत् समस्त राष्ट्र सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु भारतीय राष्ट्रभाषा स्वीकार नहि करत तावत् ने अपने काज एकतापूर्वक चलत आ' ने संसारक आने

देशसँ समस्त भारतीय राष्ट्रक सार्वजनिक रूपेँ आदान-प्रदान भऽ सकत। विशेषत: शिक्षा क्षेत्रमे भारतीयताक भावना नहि आबि सकत।

(ख) त्रिभाषा सिद्धान्त एतबा स्पष्ट कयने अछि आ' एहिसँ उत्तम कोनो समाधानो नहि देखि पड़ैछ जे निम्नवर्गसँ किछु दूर ऊपर धरि शिक्षाक माध्यम विद्यार्थी वर्गक मातृभाषा हो, यदि एहिमे किछु साहित्य पौल जाए आ' साहित्य सर्जनाक शक्तियो वर्त्तमान रहैक।

5. लघूत्तरीय प्रश्न :

(i) तेलगू, मलयालम ओ कन्नर कोन-कोन राज्यक लोकक मातृभाषा अछि।

(i) वर्द्धा योजना की थिक ?

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न :

(i) मातृभाषाक सम्बन्धमे महात्मा गाँधीक विचार स्पष्ट करू।

(ii) त्रिभाषा सिद्धान्तक अर्थ स्पष्ट करू।

(iii) हिन्दीक समस्या पर लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(iv) मैथिलीक भविष्य पर लेखकक विचार स्पष्ट करू।

गतिविधि :

(i) (क) निम्नलिखित शब्दसँ विशेषण बनाउ:

अन्तर, जाति, राष्ट्र, शिक्षा, सिद्धान्त, विकास, परस्पर, भारत, भाषा, साहित्य।

(ii) छात्र लोकनि भारतक विभिन्न राज्यक मातृभाषाक ज्ञान प्राप्त करथि।

निर्देश :

(i) शिक्षक छात्रकेँ मातृभाषाक महत्त्व बताबथि।

(ii) छात्रकेँ भोलालाल दासक मैथिली सेवाक विभिन्न आयामसँ परिचित कराबथि।